आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:31/12/2022; Published:31/01/2023

हज़ारों नदियाँ

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

मूल: सिद्धलिंगय्या जी (कन्नड)

कल
मेरे लोग
पर्वत के समान आए।

काला मुख, सफेद दाढी, उग्र आँखें
रात-दिन की हराम कर नींद
लिहाफ हटाकर रोष से भरे
भूंकप ही हुआ उनके रोष नर्तन से
चींटी के समान रेंगनेवाले शेर की दहाड में
करते असमानता का धिक्कार और धिक्कार
अमीरों की हेकडी का हरबार धिक्कार
लाखों सर्प बांबी से निकले
सारे गांव में फैले
पाताल में कूद पडे
आसमान को छू आए
सडकों पर, गलियों में
बाडी पर, मकानों पर
स्वामियों के घरों पर, देवताओं के आसनों पर
कहां कहां पर पानी की तरह ठहर गए
मेरे लोग।

इनकी जूँबा खूली तो उनका मूँह बंद
इनकी ध्वनि सुनी कि
आवाज़ उनकी दुबकी
छडी से पीटनेवाले
या हो गर्दन दबोचनेवाले

तूफान से हाथ मिलानेवाले पर थे
मेरे लोग।

पुलिस के डंडे
एजंटों की तलवार
वेदशास्त्रपुराण बंदूक के डंडे
सब तिनके और कूडे से
हवा में तैर तैर कर
आंदोलन के समुद्र से
हजारों नदियों से मिल रहे।

****